ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.3753

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

कला, कलाकार और संवेदनायें

डा0 सुनीता गुप्ता [1]

[1] अध्यक्षा एवं एसोसियट प्रोफेसर चित्रकला विभाग, धर्मसमाज महाविद्यालय, अलीगढ़

शोध-सारांश

सौन्दर्य, प्रेम, संवेदना, अनुभूति और चेतना आदि सामाजिक संस्कार है। विकासशील चैतन्य प्राणी के निरन्तर विकसित हाने से इनका भी विकास हुआ मानव,वानर और वनमनुष्य की श्रेणी से ऊपर उठकर महामानव बन गया। उसका मन, मस्तिष्क, सौन्दर्य चेतना और प्रेम निरन्तर उसकी बुद्धि के बल पर विकसित हुए और आज भी हो रहे हैं। मनुष्य को समाज की सदैव आवश्यकता रही और सामाजिकता की आकांक्षा के कारण ही उसमें सौन्दर्य प्रिय और प्रेम की वृत्ति होती है। चार्ल्स डार्विन ने मानवेतर प्राणियों में भी सौन्दर्य चेतना को स्वीकार किया है लेकिन उनमें सौन्दर्य चेतना केवल यौन-संवेदना तक सीमित है। मनुष्य ने सांस्कृतिकता एवं सामाजिकता के कारण सौन्दर्य चेतना को इन्द्रियों से नियन्त्रित धरातल दिया है। किरण संवेदना की दृष्टि से जीव दो प्रकार के होते हैं-एक वे जिन्हें सूर्य का प्रकाश आकर्षित करता है जैसे पतंगा चातक आदि दूसरे वे जिन्हें सूर्य का प्रकाश विकर्षक लगता है जैसे उल्लू, चाली आदि। यह भिन्नता प्राणी की शरीर रचना और इन्द्रियों के भिन्न प्रकार से निर्मित के कारण होती है। इसी भिन्नता के आधार पर प्राणियों की सौन्दर्य चेतना के अन्य आयाम और पक्ष निर्भर करते हैं। मनुष्य में नेत्र-मस्तिष्क सम्बन्ध की विशेषता के कारण सौन्दर्य के प्रति सोच में अन्तर आ जाता है। मस्तिष्क सौन्दर्य के प्रति जितना अधिक सजग, सक्रिय एवं समर्थ होगा, उसकी सौन्दर्य-चेतना उतनी ही तेज एवं प्रखर होती है। महाकवि बिहारी ने इसे भेद माना है-

मुख्य शब्द – कला, संवेदनायें, कलाकार

Cite This Article: डा0 सुनीता गुप्ता. (2019). "कला, कलाकार और संवेदनायें." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 277-280. https://doi.org/ 10.5281/zenodo.3592662.

संवेदना अर्थात मन में होने वाले भ्न्नि भिन्न प्रकार के अनुभव बोध जिसे अंग्रेजी में सेंसेशन (sensation) अनुभव बोध कहा जाता है संवेदना को समवेदना और समानुभूति , सहानुभूति, भावानुभाव, इंद्रियानुभव, बोध और ज्ञान भी कहते हैं। संवेदना ज्ञान का नैसर्गिक रूप होता है। जब कलाकार कोई घटना या प्रंसग देखता या सुनता है उसके पश्च्यात उसके मन में जो भाव उत्पन्न होते हैं वही संवेदना है भाव अगर दुखद है तो मन में वेदना उत्पन्न होती है और भाव अगर सुखद है, तो आनन्द की प्राप्ति होती हे। अतः संवेदना कला की मूल प्रेरण है। कलाकार संवेदना के बिना कला की निर्मिती नहीं कर सकता । संसार में घटित घटनाओं का अनुभव वह इसी के द्वारा करता है। संवेदना का जन्म कलाकार के अनुभव, समाज से प्राप्त होने वाले अनुभव और उसकी मनः स्थिति पर आधारित है। संवेदना द्वारा ही कला के सृजन के लिए कलाकार के मन में पहले भाव उत्पन्न होते हैं और इन भावों का कलाकार अपनी कलाकृतियों में अभिव्यक्त करता है।- "समै समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय।/ जाकी रूचि जेति जितै, तित तेतो सुन्दर होय॥"

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592662

देहयुक्त आत्मा का विशेष लक्षण 'संवेदना' है। यह प्रत्यक्ष की दिशा में एक कदम है। इन्द्रिय बोध करने वाली शक्ति वस्तु का प्रभाव एक प्रक्रिया के द्वारा ग्रहण करती है। किसी उत्तेजना के प्रति मानवता की प्रथम अनुक्रिया ही संवेदना है। वार्ड के द्राब्दों में "शुद्ध संवेदना एक मनोवैज्ञानिक किंवदन्ति है। भौतिक जगत में प्राणयुक्त आत्मा मनुष्य की देह को संजीव बनाती है। ज्ञानेन्द्रियों वस्तुओं के सम्पर्क में आकर जब आत्मा से होता है तो उसी को 'ऐन्द्रिय बोध' या 'संवेदना' कहते हैं। इस प्रकार से (इन्द्रिय बोध) संवेदना रूप ग्रहण है। ऐन्द्रिय बोध की शक्ति शरीर के कुछ भागों पर केन्द्रित है जैसे आंख, नाक, जिव्हा, तथा त्वचा आदि। ऐन्द्रिय बोध की मूल इन्द्रिय सृजनकारी शक्ति है। ये आत्मा की प्रतिछाया मात्र है। सुख-दुख का सम्बन्ध शरीर और आत्मा दोनो से है। आत्मा और शरीर में सामंजस्य स्थापित होने पर सुख की अनुभूति होती है वहीं सामंजस्य के विघटन से दुख का अनुभव होता है। सुख और दुख इन्द्रिय-बोध से अधिक चेतना की दशाएं हैं। ऐन्द्रियों पर विजय प्राप्ति कर उच्चतर आत्मा की स्थिति में पहुंच कर सुख-दुख पर विजय प्राप्त की जा सकती है। शरीर और मन की संवेग की स्थिति में शरीर की ताकत इतनी बढ़ जाती है कि कभी कभी आदमी गुस्से से पागल हो उठता है। लेकिन जब कोई व्यक्ति बिना कारण के, आवेग, संवेग या आवेश की अभिव्यक्ति अपनी कृति में अपने संवेगों को अभिव्यक्ति करता है तभी कला का सृजन होता है। कलाकार अपनी कृति में अपने संवेगों को अभिव्यक्ति करता है उन्हीं संवेगों को प्रेक्षक अनुभव कर आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है।

सौन्दर्यानुभूति वह अवस्था है जिसमें अनेकानेक संवेदना एवं संवेग परस्पर मिलकर प्रेक्षक के मन को उद्वेलित करते हैं। मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार 'सुन्दर' और 'असुन्दर' मनुष्य' की रूचि पर निर्भर करता है। या यों कह सकते हैं विभिन्न वातावरण, संगति और अभ्यास के पले हुए व्यक्तियों की रूचि और सोच भिन्न होती है इसीलिए सुन्दर और असुन्दर रूचि, परिवेश, वातावरण पर निर्भर करता है। दूसरी ओर यह व्यक्ति के संवेग पर भी निर्भर करता है। व्यक्ति के संवेग मूलतः दो प्रकार के होते है- भावात्मक और अभावात्मक संवेग। भावात्मक संवेग वह है जिसमें प्रेक्षक का कृति के प्रति आकर्षण रहता है अर्थात स्वीकृति का भाव होता है। अभावात्मक संवेग में अस्वीकृति अर्थात विकर्षण रहता है। यह निश्चित है कि सौन्दर्यानुभूति का सम्बन्ध हमारी भावना से होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि सुन्दर असुन्दर व्यक्ति सापेक्ष होता है।

कलाकार कलाकृति के द्वारा संवेगो की अभिव्यक्ति करता अवशक है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वहीं संवेग दूसरे में जाग्रत हो सके। वास्तव में कला का कार्य दूसरों में संवेग उत्पन्न करना नहीं बल्कि कालाकार के स्वयं के संवेगो की अभिव्यक्ति करना है। कलाकार व्यक्तिगत संवेगों और अनुभूतियों को कला में चित्रित करता है। चाहे अनुभूति और चेतना उसने समाज से ही ग्रहण की हो। कलाकार जिस समय कला रचना में संलग्न होता है उस समय की पूर्ण अनूभूति को अभिव्यक्ति करना चाहता है। मस्तिक में पूर्वानुभूत संवेदनाओं और अनुभूतियों को जाग्रत कर अभिव्यक्ति करता है। अनुभूतियों के पुरावर्तन की एक पद्धति होती है जिसके सहारे हम पुनः उन संवेदनाओं की प्राप्त कर पाते हैं। जिसे सामान्यतः हम स्मृति कहते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि स्मृति को जगाने के लिए प्रभावों या संस्कार लेखो को आन्दोलित करने की आवश्यकता होती है। एक स्मृति को जगाने के लिए केन्द्र-शरीर के अन्य तन्तुओं के सहारे अन्य तन्तुओं से प्रेरणा प्राप्त करता है। इस प्रकार एक स्मृति को जगाने के लिए केन्द्र-शरीर क अन्य तन्तुओं के सहारे अन्य तन्तुओं से प्रेरणा प्राप्त करता है और प्राप्त प्रेरणाओं को अन्य कोषों तक वैसे ही तन्तुओं के सहारे प्रेषित करता है। इस प्रकार एक स्मृति को जगाने के लिए सहस्त्रों चेताकोशों को एक साथ सक्रिय होना पड़ता है। कोश पृथक रहकर भी परस्पर सम्बद्ध रहते है अर्थात इन कोशों में पारस्परिक संगति और सामाजिकता रहती है।

संवेदनायें कलाकार को कलाकार से, समाज से, सामान्य प्राणी मात्र से जोड़ती है। एक कला को दूसरी कला से जोड़ती है। सभी कलाओं में सृजन है, अन्तर केवल आकार का होता है। कुछ स्थिर है और कुछ गतिमान

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592662

है। समझ और किसी विचार को आकार देने की भावना सभी कलाओं में रहती है। कोई भी माध्यम हो, कोई भी कला हो संवेदना सभी में एक समान तत्व है। समझ ओर किसी विचार को आकार देने की भावना सभी कलाओं में रहती हैं कोई भी माध्यम हो, कोई भी कला हो, संवेदना सभी में एक समान तत्व है। समझ और किसी विचार को आकार देने की भावना कलाओं में परस्पर सम्बन्ध स्थापित करती है। एक कलाकार अलग-अलग विधाओं में कार्य करना पसन्द करता है और सफल भी होता है। रामकुमार चित्र भी बनाते है और कहांनियां भी लिखते हैं। हुसैन की गिनती दुनिया के महान कलाकारों में की जाती है लेकिन उन्होंने सफल फिल्मों का निर्माण भी किया । सत्यजीत स्वयं एक चित्रकार थे लेकिन उन्होंने फिल्मों की कथा और संगीत भी तैयार किया और एक महान फिल्म निर्देशक और कथाकार बने। सतीश गुजराल ने एक ओर चित्रकार के रूप में कार्य किया तो दूसरी और वास्तुकार के रूप में। विवान सुन्दरम् एक चित्रकार है लेकिन उन्होंने फिल्म भी बनाई। गोपी गजवाणी चित्रकार है लेकिन शोकिया रूप में फिल्में भी बनाई। ऐसे अनेकानेक उदाहरण है जिन्होंने साहित्य, संगीत चित्रकला तथा अन्य विधाओं में एवं विभिन्न माध्यमों में काम किया। संवेग की अभिव्यक्ति संवेग की अभिव्यक्ति ने ही चित्रकला, संगीत एवं साहित्य को इतना समीप ला दिया कि चित्रकार ने कविता पर आधारित चित्र चित्रित किया, कवि ने चित्र देखकर कविता की रचना कर दी। संगीत की राग-रागनियों पर मध्यकाल से ही चित्रों का सृजन हो रहा है। राजस्थानी और पहाड़ी शैली में सभी राग-रागनियों पर चित्रांकन किया गया है। आधुनिक चित्रकार लक्ष्मण पै ने भी राग रागनियों पर आधारित चित्र चित्रित किये। चित्र रचना के समय संगीत की धुनों का आनन्द लेना तो अधिकतर चित्रकारों का शोक है। संगीत के माध्यम से वह अपनी सोच को एकाग्र करने में अधिक सफल महसूस करता है। ऐसा अव्यक्त आनन्द प्राप्त करता है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। कवि कालीदास की 'मेघदूत' जो जग प्रसिद्ध है, गुलाम मोहम्मद शेख ने उस पर आधारित चित्र-रचना की। अतुल डोडिया ने ' मदर इंडिया' फिल्म से प्रेरित हो 'हीरोश्क फिडलिंग' कृति का चित्रांकन किया। चिंतन उपाध्याय ने अलैक्जेंडर पोप की कविता से प्रेरित हो कलाकृति 2004 की रचना की। रवीन्द्रनाथ टैगोर की लघु कहानियों पर आधारित गगेन्द्रनाथ टैगोर ने 'पदमा नदी में नाव पदमा' कृति का सृजन किया। ठा0 रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'चवनिका' कविता संगह पर नन्दलाल वसु ने चित्र चित्रित किये।

कला के द्वारा भाव उत्पन्न होते हैं। उन्हें जानबूझ कर अभिव्यक्त करना कला का कार्य नहीं है। कला में दुख या सुख लिख कर बोल कर व्यक्त नहीं किये, उनकी अभिव्यक्ति होती है। कलाकार बिम्ब या प्रतीक के माध्यम से भाव उत्पन्न करते हें। भाव का नाम लेने से भाव नहीं आते, कलाकार जाने अनजाने अपनी कल्पना के सहारे विशेष की अभिव्यक्ति करता है। भावों की अभिव्यक्ति एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिन्हें कलाकार चाह कर भी रोक नहीं सकती। अभिव्यक्ति का माध्यम भिन्न हो सकता है। कलाकार अभिव्यक्ति की अभिव्यक्ति पहले स्वयं के लिए करता है दूसरे उससे बाद में प्रभावित होते हैं। जब भाव और अनुभूति की प्रेरणा कलाकार के मन और मस्तिष्क में घनीभूत होती है, वह अपने भाव प्रकाशन में अधिक रोचकता, आकर्षकता और प्रभविणुता लाने के लिए कलाकृति का सृजन करता है। कलाकृति का माध्यम वह अपने कलात्मक गुण के आधार पर चुनता है। कला के माध्यम से ही कलाकार अपने अनुभवों को अभिव्यक्ति दे पाता है। कलाकार अपनी अमूर्त जीवानुभुतियों, मनः प्रभावों और संवेगों को मूर्त रूप देकर कलाकृति का निर्माणकर अधिकाधिक संवेद्य और सौन्दर्य परक बनाता है। कलाकार सूक्ष्मतम और गहनतम अनुभूतियों को अभिव्यक्त कर कला कृति को अमर बना देता है। प्रत्येक कलाकार की अलग अलग दृष्टि होती है। अपनी अपनी दृष्टि से वह रोचकता, आकर्षण और प्रभद्गिणुता लाने का प्रयास करता है।

निश्कर्ष रूप से कह सकते है कि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थियां कलाकार की संवेदन को विविधता प्रदान करती है। कलाकार को सबसे पहले संवेदनशील होना आवश्यकता है। तभी वह सफल

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592662

कालाकर बन सकता है। संवेदना के बिना कलाकार कला निर्मिती नहीं कर सकता। कला निर्मिती के समय कलाकर कर सकता। कला निर्मिती के समय कलाकार के मन में कोई न कोई संवेदना अवश्य रहती है और कलाकृति का निर्माण कर वह प्रेक्षक के मन में संवेदना उत्पन्न करता है। कलाकार अपने प्रत्येक नये अनुभव को जीवन निरपेक्ष बनाता हुआ विशुद्ध रूप से ग्रहण करने की क्षमता रखता है। मानवीय संवेदना के साथ कला और संस्कृति जुड़ी रहती हैं।

संदर्भ

[1] सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा।
[2] बिहारी सतसई, दोहा संख्या 722